भारतीय संगीत में गान्धार ग्राम

डॉ. मनीष डंगवाल
ऐसोसिएट प्रोफेसर व विभाग प्रभारी संगीत विभाग,
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
(श्रीदेवसुमन विश्वविद्यालय कैम्पस कॉलेज),
गोपेश्वर, चमोली, उत्तराखण्ड

सारांश:
भारतीय संगीत में नाद से श्रुति, श्रुति से स्वर तथा स्वर से स्वर–सप्तक अर्थात् ग्राम की परिकल्पना की गई है। सात स्वरों का क्रमानुगत रूप ही ग्राम या स्वर–सप्तक कहलाता है। ग्राम गाया अथवा बजाया नहीं जाता। संगीत में ग्राम की उपयोगिता, विभिन्न स्वरावलियां जिन्हें मूर्च्छना या मूर्छना कहा जाता है, को प्राप्त करना है जिनका प्रयोग गायन–वादन के लिए किया जाता है। ग्राम के प्रत्येक स्वर को आरम्भिक स्वर मानकर, अगले सात स्वरों का आरोह–अवरोह करना मूर्च्छना कहलाता है। इस प्रकार ग्राम के सात स्वरों से सात मूर्च्छनाएं प्राप्त होती हैं। अतिप्राचीन काल में तीन ग्राम– षड्ज ग्राम, मध्यम ग्राम तथा गान्धार ग्राम प्रचलित रहे तथा इन तीन ग्रामों से कुल इक्कीस मूर्च्छनाएं प्राप्त होती थीं। भारतीय इतिहास के प्राचीन से मध्यकाल तक षड्ज व मध्यम ग्राम तथा उनकी मूर्च्छनाओं का स्पष्ट विवरण प्रायः सभी ग्रन्थों में प्राप्त होता है परंतु गान्धार ग्राम प्राचीन काल में ही लुप्त हो गया व उसके स्वरूप से भारतीय संगीत अनभिज्ञ हो गया।

ग्राम

ग्राम, संगीत का एक पारिभाषिक शब्द है जिसकी उत्पत्ति संस्कृत भाषा की ग्रस् धातु में मन् प्रत्यय लगाने से हुई है। इसका शाब्दिक अर्थ है गावं, वशांवली, जाति, किन्ही वस्तु विशेष का समुच्चय या समूह जैसे– गुण ग्राम, इन्द्रिय ग्राम आदि। परंतु संगीत में ग्राम शब्द का अर्थ– स्वरों का एक व्यवस्थित समूह है जिसकी तुलना पाश्चात्य संगीत के Scale से की जा सकती है। Scale या ग्राम दोनों को ही गाया नहीं जाता किन्तु उनसे अनेक Modes या मूर्च्छना और जातियों की उत्पत्ति कर, उनका गायन वादन किया जाता है।

भारतीय संगीत के ऐतिहासिक क्रम का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि स्वरों के विकास क्रम में अथवा उसके पूर्ण विकसित होते ही 'ग्राम' शब्द का प्रचलन आरम्भ नहीं हुआ अपितु उसका प्रचार बहुत बाद में हुआ। यद्यपि ग्राम अर्थात् एक निश्चित स्वर व्यवस्था, तथा उसके प्रयोग के अनेक प्रमाण, वैदिक काल में ही प्राप्त हो जाते हैं तथापि संगीत में ग्राम या उसके पर्यायवाची शब्द का प्रयोग शिक्षाग्रन्थ काल से पूर्व प्राप्त नहीं होता। संगीत के अन्तर्गत ग्राम शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम उत्तरवैदिक कालीन नारद मुनि द्वारा रचित नारदीय शिक्षा ग्रन्थ में हुआ है। नारदीय शिक्षा में षड्ज, मध्यम तथा गान्धार ग्राम एवं तीन प्रकार की मूर्च्छनाओं के वर्णन प्राप्त होते हैं। किन्तु नारद मुनि ने ग्राम को पारिभाषित नहीं किया है और न ही किसी ग्राम के लक्षणादि वर्णित किए हैं। नारदीय शिक्षा के पश्चात् भरत मुनि रचित नाट्यशास्त्र ग्रन्थ में षड्ज व मध्यम ग्रामों की विस्तृत चर्चा प्राप्त होती है किन्तु भरत मुनि ने भी ग्राम को पारिभाषित नहीं किया है। ग्राम को सर्वप्रथम 6ठी शताब्दी में मतंग मुनि द्वारा बृहद्देशी ग्रन्थ में पारिभाषित किया गया है–

समूहवाचिनौ ग्रामौ स्वरश्रुत्यादिसंयुतौ।।
यथा कुटुम्बिनः सर्व एकीभूत्वा वसन्ति हि।
सर्वलोकेषु स ग्रामो यत्र नित्यं व्यवस्थितिः।। (बृहद्देशी 1, 85–86)

तात्पर्य यह कि ग्राम सूहवाची शब्द है, जिसमें स्वर, श्रुति आदि संयुक्त रूप में रहते हैं। जैसे जहां, सभी कुटुम्बिजन अर्थात् परिवार के सदस्य, एकत्रित होकर व नित्य व्यवस्थित होकर रहते हैं वह सभी लाकों में ग्राम कहलाता है। अर्थात् ग्राम स्वर और श्रुति की एक व्यवस्थित और नियत रचना है। 8वी शताब्दी में संगीत मकरंदकार नारद ने ग्राम को ऐसा स्वरसमूह बताया है जो मर्च्छना व स्वर का आश्रय है–

ग्रामः स्वरसमूहः स्यान्मूर्च्छना तु स्वराश्रया। (संगीत मकरंद 1, 49)

तात्पर्य यह है कि ग्राम स्वरों की ऐसी रचना है जिसमें स्वरों पर आश्रित मूर्च्छनाएं समाहित होती हैं। कालान्तर में नान्यभूपाल ने भरत भाष्यम् ग्रन्थ में ग्राम की कुछ और स्पष्ट व्याख्या प्रस्तुत की है। उनके अनुसार श्रुति के उत्कर्ष एवं अपकर्ष करने से जब किसी स्वर की प्रधानता हो जाती है तब यही ग्राम कहलाता है–

एषा मध्ये श्रुत्युत्कर्षापकर्षवान् स्वर–विशेष–प्रधानभूत
–स्वरोपचितो ग्रामः इत्युच्यते। (भरत भाष्यम् 3, 2, 35)

तात्पर्य यह कि जब क्रमिक रूप से सभी स्वर व्यवस्थित होते हैं तब उनमें से किन्ही स्वरों को उनके श्रुति–स्थानों से उतारने या चढ़ाने पर नवीन ग्राम की उत्पत्ति होती है। इस प्रकार नान्यभूपाल ने इस तथ्य को इंगित किया है कि किसी पूर्व प्राप्त ग्राम के स्वरों के निर्धारित श्रुति–स्थानों में परिवर्तन करने पर वह ग्राम भी परिवर्तित हो जाएगा। परवर्ती विद्वानों ने ग्राम को प्रायः इसी प्रकार ग्रहण किया है। उक्त सभी विद्वानों के कथनों का सम्यक अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि संगीत में ग्राम, बाईस श्रुतियों पर सात स्वरों को स्थापित करने की नियत व्यवस्था है जिसपर स्वर, श्रुति, मर्च्छना आदि आश्रित रहते हैं तथा ग्राम के स्वरों को नियत व निश्चित श्रुति से उत्कर्ष अर्थात् चढ़ाने एवं अपकर्ष अर्थात् उतारने पर ग्राम परिवर्तित हो जाता है।

प्राचीन काल में संगीत में तीन ग्रामों के नामोलेख प्राप्त होते हैं। तत्कालीन ग्रन्थों में स्वरमण्डल के अन्तर्गत तीन ग्राम का समावेश माना गया है–

सप्तस्वरास्त्रयो ग्रामा मर्च्छनास्त्वेकविंशतिः।
ताना एकोनपञ्चाश–दित्येतत्स्वरमण्डलम्।। (नारदीय शिक्षा 1, 2, 4)

अर्थात् सात स्वर, तीन ग्राम, इक्कीस मूर्च्छना, उनन्चास तान ऐसा स्वर मण्डल है। वर्तमान काल में ज्ञात, गान व गान्धर्व अर्थात् संगीत को समर्पित सर्वाधिक प्राचीन, 8वीं शताब्दी ई.पू. से 5वीं शताब्दी ई.पू. के मध्य रचित, नारदीय शिक्षा ग्रन्थ में ही सर्वप्रथम तीनों ग्रामों की चर्चा प्राप्त होती है–

षड्ज–मध्यम–गान्धारा स्त्रयोग्रामाः प्रकीर्तिताः।
भूर्लोकाज्जायते षड्जो भुवर्लोकाच्च मध्यमः।।
स्वर्गान्नान्यत्र गान्धारो नारदस्य मतं यथा। (नारदीय शिक्षा 1, 2, 6–7)

अर्थात् षड्ज, मध्यम तथा गान्धार तीन ग्राम प्रसिद्ध हैं। षड्ज भू लोक में उत्पन्न हुआ है व भुव लोक में मध्यम तथा गान्धार ग्राम स्वर्ग के अन्यत्र नहीं है, ऐसा नारद का मत है। तात्पर्य यह कि नारद मुनि के मतानुसार षड्ज ग्राम की उत्पत्ति भू अर्थात् पृथ्वी लोक में हुई है तथा मध्यम ग्राम की भुव अर्थात् आकाश व पृथ्वी की मध्य, जबकि गान्धार ग्राम स्वर्ग लोक के अतिरिक्त कहीं भी विद्यमान

नहीं है। यहां संकेत प्राप्त होता है कि गान्धार ग्राम उत्तर वैदिक युग में ही स्वर्गस्थ अर्थात् लुप्त हो गया था तथा सम्भवतः षड्ज व मध्यम ग्राम तत्कालीन संगीत में प्रचलित थे। इस प्रकार शिक्षाकार नारद ने तीन ग्रामों का वर्णन किया है जिसे परवर्ती विद्वान इसी प्रकार वर्णित करते हैं।

भरत मुनि द्वारा 2री शताब्दी ई.पू. से 1ली शताब्दी ई0 के मध्य रचित नाट्यशास्त्र ग्रन्थ में षड्ज ग्राम व मध्यम ग्राम के सविस्तार वर्णन प्राप्त हो जाते हैं। भरत मुनि षड्ज ग्राम की श्रुति–स्वर व्यवस्था को स्पष्ट करते हुए कहते हैं–

तिस्रो द्वे च चतस्रश्च चतस्रस्तिस्र एव च।
द्वे चतस्रश्च षड्जाख्ये ग्रामे श्रुतिनिदर्शनम्।। (नाट्यशास्त्र 28, 22)

अर्थात् षड्ज ग्राम में तीन, दो, चार, चार, तीन, दो तथा चार इस प्रकार निर्देश है। यहां भरत मुनि ने ऋषभ से आगे क्रमपूर्वक गान्धार, मध्यम, पंचम, धैवत, निषाद एव षड्ज स्वरों की श्रुतियों का वर्णन किया है। आगे भरत मुनि प्रत्येक स्वर की श्रुतियों की संख्या पृथक–पृथक भी बताते हैं–

षड्जश्चतुश्रुतिर्ज्ञेयः ऋषभस्त्रिः श्रुतिः स्मृतः। द्विश्रुतिश्चापि गान्धारो मध्यमश्च चतुःश्रुतिः।। चतुः श्रुतिः पंचमः स्यात् त्रिः श्रुतिर्धैवतस्तथा।
द्विश्रुतिस्तु निषादः स्यात् षड्जग्रामे स्वरान्तरे।। (नाट्यशास्त्र 28, 23–24)

तात्पर्य यह कि षड्ज की चार, ऋषभ की तीन, गान्धार की दो, मध्यम की चार श्रुति, पंचम की चार, धैवत की तीन तथा निषाद की दो श्रुतियां हैं, ऐसा षड्ज ग्राम में स्वरान्तर है। इसी प्रकार मध्यम ग्राम के विषय में चर्चा करते हुए भरत मुनि कहते हैं–

चतुः श्रुतिस्तु विज्ञेयो मध्यमः पंचमः पुनः।
त्रिश्रुतिर्धैवतस्तु स्याच्चतुःश्रुतिक एव च।।
निषादषड्जो विज्ञेयो द्विचतुःश्रुतिसम्भवौ।
ऋषभस्त्रिश्रुतिश्च स्याद् गान्धारो द्विश्रुतिस्तथा।। (नाट्यशास्त्र 28, 27–28)

अर्थात् मध्यम की चार श्रुतियां हैं, पंचम की भी तीन, धैवत की चार, निषाद की दो एवं षड्ज की चार श्रुतियां हैं। ऋषभ की तीन तथा गान्धार की दो श्रुतियां होती हैं। इस प्रकार षड्ज ग्राम की श्रुति–स्वर व्यवस्था षड्ज स्वर से प्रारम्भ कर क्रमशः 4, 3, 2, 4, 4, 3, 2 है। षड्ज ग्राम में 22 श्रुतियों पर षड्ज–4 श्रुति पर, ऋषभ–7 श्रुति पर, गान्धार–9 श्रुति पर, मध्यम–13 श्रुति पर, पंचम–17 श्रुति पर, धैवत–20 श्रुति पर तथा निषाद–22 श्रुति पर स्थित माने गए हैं। वहीं मध्यम ग्राम की श्रुति–स्वर व्यवस्था मध्यम स्वर से प्रारम्भ कर क्रमशः 4, 3, 4, 2, 4, 3, 2 है। प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक सभी विद्वानों ने षड्ज व मध्यम ग्राम का सम्पूर्ण वर्णन इसी प्रकार किया है। 8वी शताब्दी में संगीत मकरंद ग्रन्थ में गान्धार ग्राम का स्वरूप वर्णन प्राप्त होता है। इस ग्रन्थ के रचनाकार नारद ने गान्धार ग्राम की श्रुति–स्वर व्यवस्था निम्न प्रकार से बताई है–

यदाधास्त्रिश्रुतिः षड्जे मध्यमे तु चतुःश्रुतिः।
रिमयोः श्रुतिरेकैका गान्धारस्य समाश्रया।।
पंचमश्रुतिरेका च निषाद श्रुतिसंश्रया।
गान्धारग्राममाचष्टे तदा तं नारदोऽब्रवीत्।।
इदं लक्षणं ब्रह्मणोक्तम्। (संगीत मकरंद 1, 54–55)

तात्पर्य यह कि जैसे षड्ज ग्राम में धा स्वर की तीन से मध्यम ग्राम में चार श्रुति का हो जाता है वैसे ही रि तथा म स्वर की एक–एक श्रुतियां गान्धार स्वर की श्रुतियों में समाहित हैं। उसी प्रकार पंचम की एक श्रुति निषाद की श्रुति में समाहित है, ऐसा गान्धार ग्राम नारद ने बताया है। यह वर्णन अपूर्ण तथा अस्पष्ट है जिस पर डॉ. विजयलक्ष्मी ने टिप्पणी की है–

यदाधास्त्रिश्रुतिः षड्जे मध्यमे तु चतुःश्रुतिः।

This is the general order of the notes 'Sa' and 'Ma' with four Shrutis and 'Dha' three Shrutis.

रिमयोः श्रुतिरेकैका गान्धारस्य समाश्रया।।

Here the author takes one Shruti from 'Ri' and 'Ma' each and allocates then to Gandha…

पंचमश्रुतिरेका च निषाद श्रुतिसंश्रया।
गान्धारग्राममाचष्टे तदा तं नारदोऽब्रवीत्।।

Narada says that Nishad takes one Shruti from 'Pancham' which has four Shrutis. In the above sloka nothing has been explained about Shadja of Gandhar Grama, which has only three Shrutis in the 'Ga' Gram. (A Critical Study of Sangit Makarand Pg 120)

डॉ.विजयलक्ष्मी के अनुसार सगीत मकरंद के इस वर्णन में गान्धार ग्राम के षड्ज स्वर के बारे में कुछ नहीं कहा गया है। यहां यह भी नहीं बताया गया है कि पंचम की एक श्रुति निषाद ने किस प्रकार ली, जबकि दोनों स्वरों के मध्य धैवत भी स्थित है। इस प्रकार संगीत मकरंद में गान्धार ग्राम के विषय में अस्पष्ट वर्णन प्राप्त होता है किन्तु नारद का ही उद्धरण देते हुए 12वीं शताब्दी में पं0 शार्ङ्गदेव ने संगीत रत्नाकर में गान्धार ग्राम का वर्णन किया है–

यद्वा धास्त्रिश्रुतिः षड्जे मध्यमे तु चतुःश्रुतिः।
रिमयाः श्रुतिरेकैका गान्धारश्चेत् समाश्रितः।।
प श्रुति धो निषादस्तु ध श्रुति स श्रुतिसंश्रितः।
गान्धार ग्राममाचष्ट तदा तं नारदोऽब्रवीत्।।
(संगीतरत्नाकर 1, 3–4)

यहां प्रथम दो पंक्तियां संगीत मकरदं से उद्धरित कर ली गई हैं परंतु तृतीय पंक्ति में कहा गया है कि 'प' की एक श्रुति 'ध' ने ले ली तथा निषाद ने एक श्रुति 'ध' से ले ली तथा एक श्रुति 'सा' से ले ली। पं0 शार्ङ्गदेव के अनुसार गान्धार का ऐसा वर्णन नारद ने किया है। इस प्रकार नारद ने गान्धार ग्राम में गान्धार व निषाद स्वरों की चार–चार श्रुतियां बताई हैं षड्ज, मध्यम, पंचम व धैवत स्वरों की तीन–तीन श्रुतियां बताई हैं तथा क्योंकि ऋषभ ने अपनी एक श्रुति गान्धार को दे दी इसलिए उसकी केवल दो ही श्रुतियां गान्धार ग्राम में हैं। इस विवरण को निम्न प्रकार से भी समझा जा सकता है– ग–4, म–3, प–3, ध–3, नि–4, सा–3 तथा रि–2 श्रुतियां। संगीत मकरंद में नारद ने तीनों ग्रामों में षड्ज ग्राम को प्रधान माना है। नारद ने तीनों ग्रामों का सम्बन्ध विभिन्न देवताओं, ऋषियों तथा दिन के प्रहरों से भी माना है–

कमाद्ग्रामत्रये देवा ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः।
हेमंतग्रीष्मवर्षासु ज्ञातव्यास्तु यथाकमम्।।
पूर्वाह्नकाले मध्यायह्ने अपराह्ने नयादिभिः।
षड्जादिमध्यगान्धाराः श्रुयेतैश्वर्यसंतति।। (संगीत मकरंद 1, 64–65)

अर्थात् षड्ज, मध्यम तथा गान्धार ग्राम कमानुसार ब्रह्म, विष्णु एवं महेश्वर तथा हेमत, ग्रीष्म व वर्षा ऋतुओं से सम्बद्ध हैं। तथा इनको कमपूर्वक पूर्वाह्न, मध्याह्न व अपराह्न काल में सुनने से ऐश्वर्य में

वृद्धि होती है। संगीत मकरंद के पश्चात् 10–11वीं शताब्दी में नान्यभपूाल ने भरत भाष्यम् ग्रन्थ में षड्ज व मध्यम ग्राम के साथ गान्धार ग्राम की भी चर्चा की है–

षड्जर्षभ–गान्धार–मध्यम–पंचम–धैवतैःसनिषादैः।
कमते षड्जग्रामोभि.....।।
म–प–ध–नि–सरि–गैरेवं–कम गीतैः स्याच्च मध्यमग्रामः।
ग–म–प–ध–नि–स–रित्येवं गान्धारग्राममाह नान्यपतिः।। (भरतभाष्यम् 3, 39–40)

यहां नान्यभूपाल ने गान्धार ग्राम के स्वर–सप्तक का वर्णन किया है। नान्यभूपाल ने यह भी स्पष्ट किया है कि गान्धार स्वर, षड्ज तथा मध्यम ग्राम में द्विश्रुतिक है जबकि स्व ग्राम (गान्धार ग्राम) में वह चतःश्रुतिक है–

गान्धारः षड्जग्रामे मध्यमग्रामे च द्विश्रुतिः।
स्वग्रामे तु चतुःश्रुतिरेव।। (भरत भाष्यम् 3, 51)

नान्यभूपाल ने गान्धार ग्राम का शेष वर्णन संगीत मकरंद के समान ही किया है। उनके अनुसार भरत मुनि ने अतितारत्व, अतिमन्द्रत्व व वैस्वर्य के कारण गान्धार ग्राम का उल्लेख नहीं किया है–

द्वौ ग्रामौ भरतेनोक्तै, ग्रामौ गान्धार–पूर्वकः।
अतितारातिमन्द्रत्वाद् वैस्वर्य; नोपदर्शितः।। (भरत भाष्यम् 3, 54)

बृहद्देशी ग्रन्थ में षड्ज तथा मध्यम ग्रामों के स्वर–मण्डल प्राप्त होते हैं किन्तु भरत भाष्यम् में गान्धार ग्राम का श्रुति–मण्डल भी दिया गया है जो इस ग्रन्थ की विशेषता है। नान्यभूपाल ने स्वर–मण्डल बनाने की पूर्ण विधि निर्देश सहित समझाई है। उन्होंने उसके लिए पांच रेखाएं लम्बवत तथा छः रेखाएं क्षैतिज अवस्था में एक दूसरे को भेदते हुए तथा बीस कोष्टक बनाकर व कुछ बाहर को निकलती हुई अवस्था में खींचने को कहा है। इस प्रकार उनके 22 बाहर निकले हुए भागों को 22 श्रुतियां मानकर उनपर ग्रामों के स्वरों की स्थापना बताई है। उनके द्वारा बताया गया गान्धार ग्राम का स्वर–मण्डल इस प्रकार है–

गान्धार ग्रामिक स्वर–मण्डल प्रस्तार

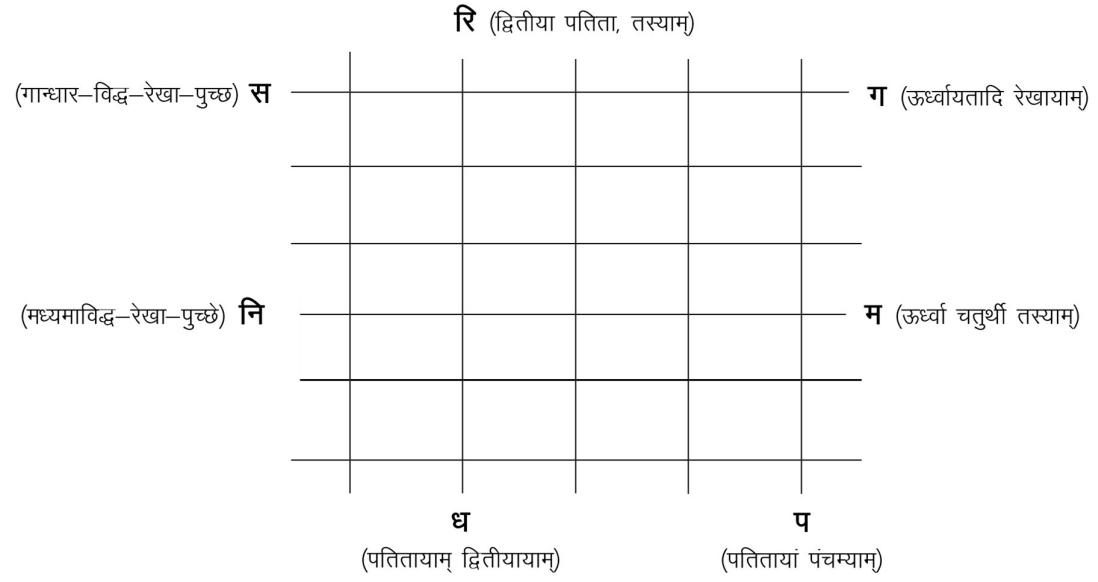

(भरत भाष्यम् 3, 76–80)

कालान्तर में कुछ मध्यकालीन संगीतज्ञों ने अपने ग्रन्थों में भी गान्धार ग्राम का वर्णन किया है किन्तु वह समस्त वर्णन मकरंदकार नारद व नान्यभूपाल के समान ही है। मध्यकाल में मेल–राग प्रणाली के प्रादुर्भाव तथा शुद्ध–विकृत स्वरों के प्रचार के कारण ग्राम व्यवस्था का पूर्णतया लोप हो गया। जिस कारण गान्धार ग्राम के साथ ही षड्ज व मध्यम ग्राम भी प्रासागिक न रहे तथा लुप्त हो गए।

इस प्रकार ज्ञात होता है कि जहां अन्य संस्कृतियों के संगीत में प्राचीन से लेकर आधुनिक काल तक केवल एक ही ग्राम या सप्तक या स्केल का मुख्तया प्रचार रहा वहीं प्राचीन भारतीय संगीत में तीन ग्रामों का प्रचार रहा जो कालान्तर में दो ग्रामों तक सिमट गया तथा भारतीय इतिहास के मध्य काल में सांस्कृतिक संक्रमण के परिणाम स्वरूप ग्राम व्यवस्था का पूर्ण ह्रास हो गया।

यद्यपि गान्धार ग्राम के विलोपन के संकेत वैदिक काल में ही प्राप्त हो जाते हैं तथापि ठोस प्रमाणों के अभाव में कहा जा सकता है कि भारतीय इतिहास के प्राचीन काल तक सम्भवतः वृहद भारत भूमि के कुछ भागों में गान्धार ग्राम शेष दो ग्रामों के साथ प्रचलित रहा। परंतु बाह्य संस्कृतियों के भारतीय संस्कृति में संकरण के कारण ग्राम व्यवस्था के लोप के साथ ही अंततोगत्वा गान्धार ग्राम के शेष चिन्ह भी भारतीय संगीत से मिट गए।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

१. भारतीय संगीत का इतिहास–डा. शरच्चन्द्र श्रीधर परांजपे–चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी
२. भारतीय संगीत का इतिहास–डॉ. ठाकुर जयदेव सिंह–संगीत रिसर्च अकादमी, कलकत्ता
३. संगीत बोध–डॉ. शरच्चन्द्र श्रीधर परांजपे–म.प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल
४. नारदीय शिक्षा –नारद मुनि–भट्ट शोभाकर–श्रीपीताम्बरापीठ सस्कृत परिषद, दतिया
५. नारदीय शिक्षा में संगीत–मनीष डंगवाल–राज पब्लिकेशन, नई दिल्ली
६. नाट्यशास्त्र–भरत मुनि–एम. रामकृष्ण कवि–ओरिएन्टल इंस्टिट्यूट, बड़ौदा
७. नाट्यशास्त्र–भरत मुनि–श्री बाबूलाल शास्त्री–चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी
८. बृहद्देशी–मतंग मुनि–बालकृष्ण गर्ग– संगीत कार्यालय, हाथरस
९. संगीत मकरदं –नारद–गायकवार्ड सिरीज
१०. संगीत मकरंद–नारद–लक्ष्मीनारायण गर्ग–संगीत कार्यालय, हाथरस
११. भरत भाष्यम्– नान्यभूपाल–चैतन्य पुण्डरीक देसाई–इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़
१२. संगीत रत्नाकर–पं. शार्ङ्गदेव–आनन्दाश्रम संस्कृत ग्रन्थावली
१३. Sangita Ratnakara-Sarangadeva-Pt. S.S. Sahtri-The Adyar Library and Research Center, Madras
१४. Brhaddesi of Matanga Muni-Prem Lata Sharma-I.G.N.C.A., New Delhi
१५. Nardiya Siksa-Narada Muni-Usha R. Bhise-Bhandarkar Oriental Research Institute, Pune
१६. A critical Study of Sangita Makaranda-Dr.(Mrs.) M. Vijay Lakshmi-Gyan Publication House New Delhi